PRESS RELEASE

RELEASE FUNCTION OF E-SWADESHI VIGYAN PATRIKA 2020

भारतीय स्वदेशी विज्ञान आंदोलन द्वारा अभिनव पहल के रूप में षाण्मासिक "स्वदेशी विज्ञान पत्रिका" के बहुभाषीय विशेषांक के विमोचन का कार्यक्रम

डॉ० आशुतोष पारीक ने उद्घोषक की भूमिका के तहत मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का श्री गणेश किया व बताया कि कैसे प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में विभा दिल्ली का अद्भुत योगदान हमेशा प्रशंसनीय रहा है। डॉ० रश्मि शर्मा, मुख्य संपादक, ई - पत्रिका ने सभी अतिथियों का परिचय व स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने आगे बताया कि इस विशेषांक में कोरोना महामारी से जूझने से लेकर बचाव, परीक्षण, इलाज, नवाचार और पारिस्थितिकी प्रभाव, इत्यादि का विवरण प्रस्तुत किया गया है। अन्य प्रमुख विषयों जैसे खाद्य सुरक्षा, मृदा प्रदूषण से खाद्य और स्वास्थ्य पर बढ़ते दुष्प्रभाव, अपशिष्ट संसाधनों से ईंधन उत्पादन, मशरुम संरक्षण में प्रगतिशील कार्य, मोवा तालाब के प्रवर्तन जैसे सार्वजनिक सामाजिक कर्तव्य, पर्यावरण प्रदूषण निपटाने की समस्याएँ और कुछ घरेलू उपाय, वैदिक ज्ञान द्वारा पारिस्थितिकी सन्तुलन, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल हेतु आयुर्वेद व हर्बल दवाओं में क्लीनिकल शोध निष्कर्षों पर प्रकाश भी डाला गया। डॉ० अंजन रे ने अपने उद्बोधन में उनके निवास स्थित प्रांगण में वन जीवों की उपस्थिति का जिक्र किया जो उनकी संस्था व परिवार के साथ संयुक्त विचरण करते हैं, पर्यावरण के साथ असंतुलन की वजह से ग्लोबल वार्मिंग पर रोक लगाना हर एक की ज़िम्मेदारी बनती है, इस विषय पर डॉ० रे ने विज्ञान भारती के प्रयासों की सराहना की। डॉ. देवेन्द्र प्रकाश भट्ट, अध्यक्ष, वि भा दिल्ली कार्यक्रम की अध्यक्षता अभिभाषण में संस्था के बहुभाषीय प्रकाशन श्रृंखला के बारे में बताया कि कैसे संकट में अच्छी वस्तु, अच्छे संबंध या अच्छी नीतियाँ ज्यादा अच्छी लगने लगती हैं। इसलिए विश्वव्यापी कोरोना महामारी काल में आदरणीय प्रधानमंत्री जी द्वारा उनके लॉकडाउन - 4 संभाषण में लोकल अथवा स्वदेशी मंत्र को व्यक्ति व देशीय हित में नया विकास मॉडल बनाने हेतु सभी को अनुशासनात्मक रूप से कर्तव्यनिष्ठ तथा संकल्परत होने का आह्वान किया जो आज की परिस्थिति में "वि भा मोडस ओपरेंडी" को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तर से अधिक प्रासंगिक बनाती है। अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी की शक्ति को पहचानने, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का विज्ञान के उच्च शिखर पर लाने, अपनी खोई हुई संस्कृति और गौरव को फिर से प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध देश में 'स्वदेशी साइंस मूवमेंट ऑफ इंडिया' के नाम से प्रसिद्ध विज्ञान भारती, दिल्ली विगत 25 वर्षों से दिल्ली में निरन्तर कार्यरत है और पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विकास के साथ जोड़ने के लिए इस बपौती का प्रयोग करते हुए उसने हमारे द्वारा

भारतीय भाषाओं में दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इसी अविरल अभियान के अंतर्गत वर्तमान परिस्थितियों में कोरोना एवं पर्यावरण विशेषांक से नामांकित चिरप्रतीक्षित ई-स्वदेशी विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन एक नया प्रयास है। इस उद्घाटन अंक के संदर्भ में डा. भट्ट मानते हैं कि भारत की कई सरल भाषाओं में, लेखों के प्रकाशन के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे मौलिक शोधों, नवीन प्रयोगों, एक नई सोच एवं चिंतन को अनेकानेक जनसमूहों एवं व्यक्तियों तक पहुँचा कर अन्य सभी को राष्ट्रीय उत्थान में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित करने में हिन्दी भाषा के नाम का महिमागान व सैलिब्रेशन मात्र देश में न हो, बल्कि यथार्थ में यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारा मूल उद्देश्य विज्ञान की मौलिकता और तथ्यात्मकता को खोए बिना वैज्ञानिक लेखन की उपलब्धियों को आम जन तक पहुँचाने हेतु बिना अंग्रेजी के विरोध से उनकी ही स्वभाषा (देशीय भाषा, मातृभाषा) से इस पत्रिका में हो व विज्ञान को एक विशिष्ट वर्ग (Class Commodity) मात्र के लिए महलों में बंद रखने हेतु नहीं अपितु जनमानस (Mass Commodity) तक उसे पहुँचाते रखने का संस्था का संकल्प भी पूर्ण हो। अतः हमें इस मॉडल को पॉलिसी मोड के तहत सतत् विकास के लिए प्रभावशाली बनाना होगा जिसमें ई- विज्ञान पत्रिका का सर्जन मील का पत्थर साबित होगा। सतत् विकास के मार्ग पर बढ़ने के लिए इन्हीं संकल्पनाओं एवं विचारों को दृष्टिगत रखते हुए आत्मनिर्भरता लाने हेतु किस प्रकार हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर नये आर्थिक आयाम बनाएँ, इस पर पत्रिका के संरक्षक द्वारा इस उद्घाटन अंक में सुमंत्रिते सुविक्रांते सुकृते सुविचारिते मंत्र पर बल दिया और इंडिजिनयस प्रायर आर्ट सर्च **(Indigenous prior art search)** को लेकर पानी के परिप्रेक्ष में ज़मीनी उदाहरण पेश किया जिसमें उन्होंने तेलंगाना ककाटिया मिशन **(Kakatia Mission)** व धन फ़ाउंडेशन के 2 उदाहरण दिए जिसके तहत पानी के कंज़र्वेशन रेस्टोरेशन व मेंटेनेंस को अन्यत्र रेप्लिकेट किया जा सकता है और आगे नवाचार भी उन्नत हो सकते हैं।

प्रो० प्रवीण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान दिल्ली द्वारा पत्रिका के ई - विशेषांक का विमोचन किया गया, अपने उद्बोधन में ई - स्वदेशी विज्ञान पत्रिका को ज़्यादा प्रासंगिक इसीलिए बताया क्योंकि कोरोना काल में कोई भी राष्ट्र या व्यक्ति किसी अन्य राष्ट्र व व्यक्ति के लिए कुछ नहीं कर रहा तथैव विज्ञान भारती का स्वावलंबी प्रयास ही हमें आत्मनिर्भर बना सकता है। प्रो० कुमार ने गांव के उदाहरणों से युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से अभिभूत भी किया। श्री रोशन अग्रवाल, महासचिव, विज्ञान भारती, दिल्ली ने पत्रिका के बृहत् प्रचार प्रसार एवं सर्कुलेशन पर चर्चा पर रौशनी डाली। श्री अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन में इसके तहत आज की परिस्थिति में चर्चा व विचार मंथन आगे भी साझा व प्रकाशित हो, ऐसी शुभेच्छा प्रकट की क्योंकि नई खोजों की प्रक्रिया के जरिए ही ज्ञान धन सम्पदा में रूपांतरित होता है और इसी कड़ी में हमारे देश में एक सक्षम ढाँचा खड़ा करने की ज़रूरत पर बल देकर ऐसे ढाँचे के अन्तर्गत एक दूसरे पर निर्भर रहने वाली कंपनियों / इन्डस्ट्री, ज्ञान देने वाली संस्थाओं (यूनिवर्सिटी, कॉलेज, अनुसंधान संस्थान) के बीच तालमेल बैठाने वालों (विशेषज्ञ, तकनीकी सेवा या सलाह देने वाले) और ग्राहकों के बीच निकट संबंध स्थापित करने वाले संयुक्त तंत्र विकसित करने होंगे जिससे गुणवत्ता के साथ-साथ उत्पादकता में भी बढ़ोतरी होगी। इन तीनों

घटकों को एक साथ लाने और एक मंच प्रदान करने का हमारा निःस्वार्थ सेवा प्रयास देश में स्वावलंबन व राष्ट्रीयता का वातावरण भी तैयार करेगा, जिससे ई-मोड से प्राप्त ज्ञान या ई- प्रकाशन डिजिटल नॉलेज एक प्रभावी आत्मनिर्भर ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी नेशन प्रतिस्थापित करने में सहायक होगा।

Please revert to: swadeshivigyan@gmail.com

vigyanbharati2@rediffmail.com

Mobile: 9911900671, 7376314900, 9414355381

Website : www.swadeshisciences.org